आय - प्रभाव (Income - Effect)

आय - प्रभाव उपभोक्ता की आय में परिवर्तन से उसकी माँग में परिवर्तन को बताता है।

उपभोक्ता की रुचियों तथा दोनों वस्तुओं की कीमतें स्थिर होने पर, उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होने के कारण उसकी माँग में जो परिवर्तन होता है। उसे आय प्रभाव कहते हैं। इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं

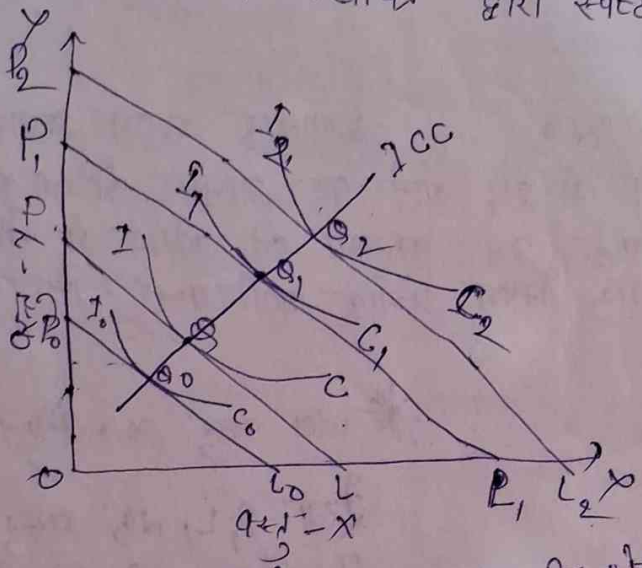

वस्तुओं की कीमतें तथा आय दी होने पर बजट रेखा PL है उपभोक्ता अनिधमान वक्र IC के Q बिन्दु पर संतुलन में है तथा वस्तु X की OL मात्रा तथा वस्तु Y की OY मात्रा खरीद रहा है अब कल्पना करते हैं कि उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है जिससे वह दोनों वस्तुओं की अधिक मात्रा खरीद सकता है नई बजट रेखा P1L1 होगी। अब वह बजट रेखा P2L2 के I1C1 के Q1 पर संतुलन में है। यदि उसकी आय घटती है तो वह बजट रेखा P0L0 के उपभोक्ता अनाधिमान I0C0 के Q0 बिन्दु पर संतुलन में होगा। बिन्दु Q0, Q, Q1 Q2 के मिलाने से आय उपभोग वक्र (Income consumption curve) ICC मिलता है। यह ICC वक्र माँग अथवा क्रय मात्रा पर आय प्रभाव को प्रकट करता है।

वस्तु की प्रकृति एवं आय उपभोग रेखा

* आय प्रभाव धनात्मक — धनात्मक आय प्रभाव से यह अभिप्राय है कि जैसे-जैसे उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है, जबकि वस्तुओं की कीमतें स्थिर है, उपभोक्ता की माँग में भी वृद्धि होती है

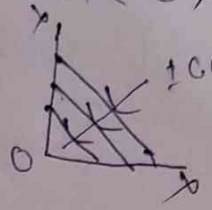

आय-उपभोग रेखा बाएं से दाएं ऊपर उठती हुई होती है।

* आय प्रभाव ऋणात्मक — ऋणात्मक आय प्रभाव का अभिप्राय यह है की आय में वृद्धि होने पर उपभोग की जा रही वस्तुओं की माँग घटती है। जबकि उन वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। ऋणात्मक आय प्रभाव वाली वस्तुएं निम्न वस्तुएं कहलाती है।

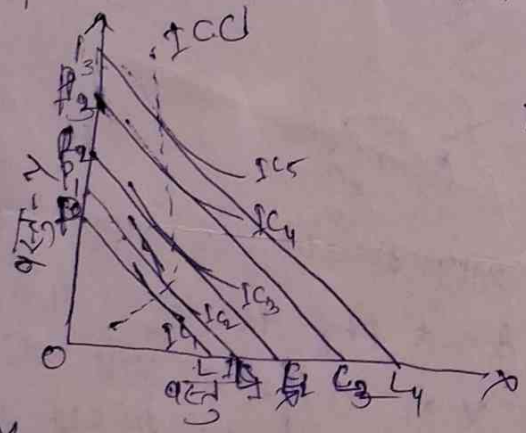

* जब वस्तु X - निम्न वस्तु है।
रेखा P_1L_1 तक वस्तु X सामान्य वस्तु है लेकिन रेखा P_2L_2 के बाद वस्तु X निम्न वस्तु हो जाती है।

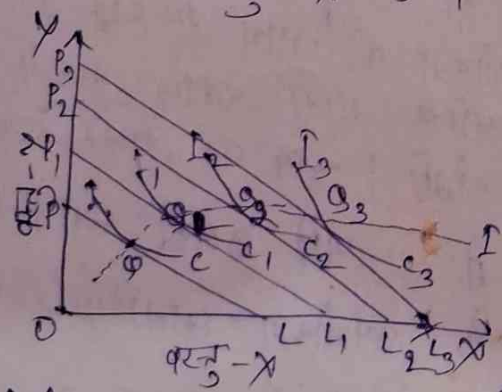

* जब - वस्तु Y निम्न वस्तु है
रेखा P_1L_1 तक वस्तु Y सामान्य वस्तु है लेकिन रेखा P_2L_2 के बाद वस्तु Y निम्न वस्तु है।

Note — एक निश्चित आय स्तर के बाद ही कोई वस्तु निम्न वस्तु बनती है।

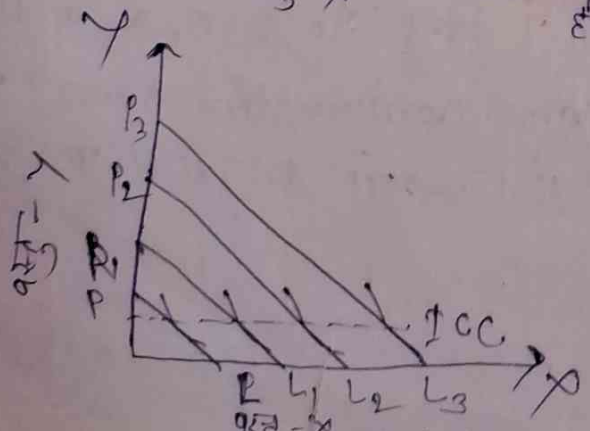

वस्तु-X आय-प्रभाव जब वस्तु Y तटस्थ है,

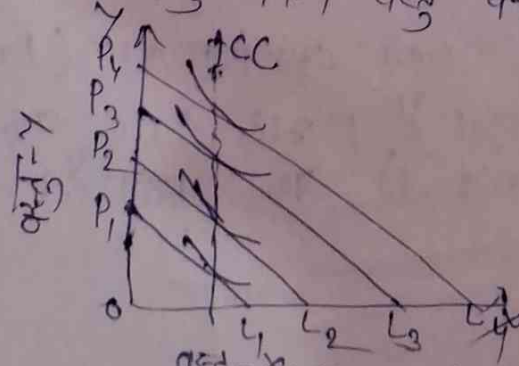

जब वस्तु X तटस्थ वस्तु है